

## भूमिका

ग़ज़ल वह लोकप्रिय छंद विधा है जिसे कवि अपने भावों की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाते हैं। उर्दू साहित्य में ग़ज़ल प्रमुख विधा रही है। इसका आग़ाज़ अरब से हुआ है लेकिन इसकी परंपरा का विस्तार फ़ारसी से हुआ। इसके बाद फ़ारसी से उर्दू में आकर ग़ज़ल अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँची और उर्दू अदब की मानो पहचान ही बन गई। उर्दू के बाद ग़ज़ल का विस्तार धीरे-धीरे अन्य भाषाओं में भी होने लगा और नतीजतन यह हिंदी, पंजाबी, गुजराती, मराठी यहाँ तक कि तमिल में भी कही जाने लगी। ग़ज़ल हिंदुस्तान में बाहर से आई विधा है लेकिन यहाँ की संस्कृति में शामिल होकर रचने-बसने लगी।

ग़ज़ल की यह परंपरा उर्दू-फ़ारसी की ही तरह हिंदी में भी लगभग तेरहवीं शताब्दी से छिटपुट रूप में चली आ रही थी लेकिन विचारकों ने उस पर ज़्यादा ग़ौर नहीं किया। इस दौर में अमीर ख़ुसरो की अनेक ग़ज़लें हैं जो रेख़ता में, फ़ारसी-उर्दू मिश्रित हिंदी में हैं। अमीर ख़ुसरो के बाद कई ग़ज़लकारों ने ग़ज़लें कहीं और हिंदी ग़ज़ल का निरंतर विस्तार होता रहा। इस कड़ी में एक मोड़ आधुनिक युग में साठ के दशक में आता है जहाँ दुष्यंत कुमार आधुनिक सन्दर्भों को ग़ज़लों से जोड़ते हैं और ग़ज़ल एक नए रूप में लोगों के सामने आती है। दुष्यंत से प्रभावित होकर अनेक कवि ग़ज़लें लिखना शुरू करते हैं और तमाम पत्र-पत्रिकाओं में ग़ज़लों का प्रकाशन होने लगता है। ग़ज़ल की दुनिया में बाढ़-सी आ जाती है।

दुष्यंत कुमार की इसी परंपरा को कुँवर बेचैन, अदम गोंडवी, रामकुमार कृषक जैसे कई ग़ज़लकार आगे लेकर जाते हैं। दुष्यंत के बाद वर्तमान में इस कड़ी को आगे ले जाने वाले जिस ग़ज़लकार का नाम आता है वह वशिष्ठ अनूप हैं। उनकी ग़ज़लों में आम आदमी से जुड़ी संवेदना, पीड़ा, आक्रोश, विडम्बना, संघर्ष आदि का समावेश होता है। साथ ही प्रेम सौन्दर्य और भाषा का भी अद्भुत योगदान है।

ग़ज़ल की तमाम बातों को ध्यान में रखते हुए वर्तमान हिंदी ग़ज़ल के विषय में जानने की इच्छा मेरे मन में थी जिसके लिए मैंने प्रस्तुत विषय का चुनाव किया। लघु शोध-प्रबंध “हिंदी ग़ज़ल की विषयवस्तु का विश्लेषणात्मक अध्ययन (विशेष सन्दर्भ : वशिष्ठ अनूप की ग़ज़लों)” में मैंने वशिष्ठ अनूप की ग़ज़लों के माध्यम से हिंदी ग़ज़ल की वर्तमान परिस्थितियों को जानने का प्रयास किया है। अपनी अध्ययन सुविधा के अनुसार मैंने अपने शोध विषय को चार अध्यायों में विभाजित किया है और अंत में उपसंहार दिया है।

प्रथम अध्याय में ‘ग़ज़ल : पूर्वपीठिका’ के अंतर्गत ग़ज़ल का नामकरण, अर्थ एवं परिभाषा के साथ-साथ ग़ज़ल के स्वरूप एवं इतिहास को जानने का प्रयास किया गया है। ग़ज़ल से जुड़े अरबी-फ़ारसी, फ़ारसी-उर्दू एवं हिंदी साहित्य में विभिन्न विद्वानों के मतानुसार ग़ज़ल का नामकरण, अर्थ एवं परिभाषा का जायज़ा लिया गया है। इसके बाद ग़ज़ल के स्वरूप की चर्चा की गई है जिसके बिना ग़ज़ल की कल्पना नहीं की जा सकती। ग़ज़ल के इतिहास का भी जायज़ा लिया गया है जिसमें फ़ारसी से होते हुए उर्दू और फिर हिंदी ग़ज़ल के विकास की चर्चा की गई है।

द्वितीय अध्याय ‘वशिष्ठ अनूप : व्यक्तित्व एवं कृतित्व’ के अंतर्गत ग़ज़लकार वशिष्ठ अनूप के जीवन से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारियाँ हैं। उनके जन्म, माता-पिता, शिक्षा, कार्यक्षेत्र, साहित्य क्षेत्र, एवं अन्य गतिविधियों से जुड़े रहने के विषय में जानने का प्रयास किया गया है। इनमें उनके कुछ मधुर तो कुछ तीखे अनुभवों को जानने का प्रयास है।

तृतीय अध्याय ‘वशिष्ठ अनूप की ग़ज़लों की विषयवस्तु का विश्लेषणात्मक अध्ययन’ में वशिष्ठ अनूप की ग़ज़लों में निहित विषयवस्तु का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। इसके अंतर्गत वशिष्ठ जी की ग़ज़लों में समाज में मौजूद राजनैतिक चेतना, सामाजिक चेतना, स्त्री विमर्श, प्रकृति एवं पर्यावरण, प्रेम एवं सौन्दर्य, बाज़ारवाद, आम आदमी की पीड़ा आदि विषयों के आधार पर अध्ययन किया गया है। इन विषयवस्तु के अंतर्गत भूख, ग़रीबी, बदहाली, साम्प्रदायिकता, धार्मिक उन्माद, भ्रष्टाचार आदि की चर्चा की गई है।

चतुर्थ अध्याय 'वशिष्ठ अनूप की ग़ज़लों की भाषा एवं शिल्प' के अंतर्गत वशिष्ठ अनूप की ग़ज़लों में प्रयुक्त उर्दू-फारसी-अरबी-हिंदी आदि भाषाओं का ज़िक्र किया गया है। इसके साथ ही वशिष्ठ जी की ग़ज़लों में प्रयुक्त शिल्प पर भी चर्चा की गई है जिनमें बिम्ब, छंद, अलंकार, प्रतीक आदि हैं।

उपसंहार में चारों अध्यायों का निष्कर्ष देते हुए हिंदी ग़ज़ल के भविष्य की ओर इंगित किया गया है तथा वशिष्ठ अनूप एवं उनकी ग़ज़लों का समाज पर क्या प्रभाव रहेगा, इस पर विचार किया गया है।

सर्वप्रथम मैं अपने श्रद्धेय गुरुवर प्रो. कृष्ण कुमार सिंह जी, अध्यक्ष हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग, महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा का अत्यंत आभारी हूँ जिनके निर्देशन में मेरा यह शोध कार्य संपन्न हुआ। समय-समय पर उन्होंने मेरा मार्गदर्शन किया और लेखन से जुड़ी बुनियादी चीज़ों पर ध्यान दिया। उनके आत्मीय स्नेह, आशीर्वाद, निर्देशन एवं प्रोत्साहन के प्रति मैं आजीवन ऋणी रहूँगा। इसी सन्दर्भ में श्रद्धेय डॉ. रामानुज अस्थाना जी का भी मैं आभार व्यक्त करता हूँ जिनके सुझाव द्वारा विषय-चयन में सहायता मिली। मेरे लघु शोध-प्रबंध लेखन में सहायक सामग्री के रूप में अनेक पुस्तकों एवं पत्र-पत्रिकाओं का सहयोग मिला है। उनके लेखकों एवं संपादकों के प्रति मैं आभारी हूँ। विशेष रूप से मैं ग़ज़लकार वशिष्ठ अनूप जी का भी हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने ग़ज़ल संग्रहों को उपलब्ध कराने में मेरी मदद की। साथ ही उन्होंने अपनी जीवन-यात्रा से मुझे परिचित कराया जिसके फलस्वरूप उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को मैं अपने शोध में रख पाया।

मैं महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा एवं दिल्ली विश्वविद्यालय के पुस्तकालयों के कर्मचारियों के प्रति भी कृतज्ञ हूँ जिन्होंने समय-समय पर विषय से संबंधित पुस्तकों एवं पत्र-पत्रिकाओं को अध्ययन हेतु उपलब्ध कराया।

इसके बाद मैं अपने उर्दू के उस्ताद डॉ. इरशाद नियाज़ी, डॉ. इम्तियाज़ अहमद, डॉ. अली अहमद इदरीस (उर्दू विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय) एवं डॉ. मुसव्विर रहमान (हिंदी विभाग, जामिया

मिल्लिया इस्लामिया) का भी आभार व्यक्त करना चाहूँगा जिन्होंने समय-समय पर उर्दू भाषा एवं साहित्य से संबंधित मेरा मार्गदर्शन किया है। अपने पूर्व गुरुवर हिंदी भाषा के ज्ञाता डॉ. रमेशचंद्र मेहता जी (जाकिर हुसैन दिल्ली कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय) का भी कृतज्ञता ज्ञापन करता हूँ जो सदैव भाषा की समझ को विकसित करने में मेरा मार्गदर्शन करते रहे हैं।

अपने माता-पिता (श्रीमती सुरजी देवी, श्री रामचंद्र) के प्रति हृदय से कृतज्ञ हूँ जिनकी मेहनत और लगन की बदौलत मैं आज इस मुकाम तक पहुँचा। साथ ही मैं अपने भाई छोटे मुकेश कुमार, बहनें गुड़िया, लीला, कुसुम, संगीता के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने समय-समय पर मुझे आगे बढ़ने का हौसला दिया। साहित्य से जुड़े तमाम मुद्दों पर सदैव छोटे भाई मुकेश कुमार से चर्चा-परिचर्चा होती रही है एवं सुझाव मिलते रहे हैं।

इसी क्रम में मेरे कई मित्रों का भी मैं आभार व्यक्त करता हूँ जिनका समय-समय पर मुझे सुझाव मिलता रहा। इन प्रबुद्ध मित्रों में प्रेम कुमार, कुमार गौरव, राकेश कुमार आदि शामिल हैं।

प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से मैं उन मित्रों का भी आभार व्यक्त करता हूँ जिनका सुझाव सदैव मुझे मिलता रहा। उन मित्रों में आशिया, वंदना, वीनू, रवि, हेमलता, नरेन्द्र, रोशन कुमार प्रसाद, विजय कुमार, तरुण आदि विशेष उल्लेखनीय हैं। इनके अतिरिक्त और भी मेरे मित्र हैं जिनके नाम यहाँ दर्ज नहीं किए जा रहे हैं।

अंत में पुनः अपने शोध निर्देशक प्रो. कृष्ण कुमार सिंह और गजलकार प्रो. वशिष्ठ अनूप जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करता हूँ जिनके मार्गदर्शन और सहयोग से मेरा लघु शोध-प्रबंध पूर्ण हो सका।

– लोकेश कुमार